International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रसाद के साहित्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना

Dr. Vivek Singh, Assistant professor

Hindi Department, Kamla Nehru P. G. College Tejgaon Raebareli

कवि अपने युग परिवेश से प्रभावित ही नहीं होता, बल्कि अपनी युगांतकारी दृष्टि और कृतियों से उसे प्रभावित भी करता है। कभी वह अतीत की प्रेरणा से नवनिर्माण का संकल्प दोहराता है, तो कभी नवनिर्माण से भविष्य के लिए एक अजर अमर अतीत का सृजन करता है। जयशंकर प्रसाद भी अगर अपने पूर्ववर्ती एवं युगीन परिवेश से प्रभावित होते हैं तो परवर्ती वातावरण को दिशा एवं दृष्टि देकर एक सबल वर्तमान का निर्माण भी करते है। प्रसाद जब हिन्दी साहित्य के काव्य इतिहास में प्रवेश करते हैं तो उस युग को द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। उस युग में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक दृष्टि से क्रान्तिकारी परिवर्तन हो ही रहे थे, साहित्यिक दृष्टि से भी एक बदलाव आ रहा था। गांधी, तिलक, राजाराम मोहन राय, सुभाषचन्द्र बोस एवं पटेल आदि अनेकों क्रान्तिकारी नेता स्वतंत्रता के स्वर को बुलंद कर रहे थे, तो साहित्य के क्षेत्र में विषय एवं भाषा का विद्रोह मुखर हो रहा था। प्रसाद के सामने तो एक तरफ सामाजिक अभाव, सांस्कृतिक विघटन, नैतिक मूल्यों का ह्रास आर्थिक एवं राजनैतिक बदलाव चुनौती बना था तो दूसरी तरफ स्वर्णिम अतीत की तरु हो रहा अन्याय, भारतीय काव्य एवं साहित्य परम्परा के बिखरते छूटते मूल्यों की पीड़ा और सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के दूर होते जाने का दर्द भी प्रश्न बना हुआ था प्रसाद ने इन सभी समस्याओं से जूझने के लिए सृजनात्मक स्वीकृत और कलात्मक विद्रोह को चुना। पूव्र प्रचलित दीर्घ भारतोय काव्य परम्परा के मूल्यों को चिन्तनशील – अतीतपरक दृष्टि से संजोया ओर युगीन विघटन एवं पतनकारी प्रवृत्तियों का स्वच्छदतावादी दृष्टि से विद्रोह किया। काव्य और दर्शन का अद्भुत समन्वय कर उन्होंने युग और देश की चेतना को काव्य के माध्यम से मुखर स्वर किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पसाद का युग वास्तव में 20वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध का युग है। पश्चिम की धारणा में विचारधाराएं धीरे–धीरे देश में प्रवेश पाने लगी थी। ऐसे में देश ब्रम्ह समाज और आर्यसमाज जैसे कई समाजसुधारक संस्थाओं के नेतृत्व में सांस्कृतिक चेतना की नई दिशा खोजने लगा था। दक्षिण भारत में थियोसोफीकल का आर्विभाव, बनारस में एनीबेसेन्ट की कोशिश बंगाल में रामकृष्ण परमहंस के लोकसंग्रह और समाजसुधार जैसे कई प्रयास नई जागृति एवं चेतना को प्रसारित कर रहे थे। इन सभी आन्दोलनों के मूल में देशप्रेम एवं देश सेवा की भावना कार्यरत थी। साहित्य में भी इसी आन्दोलित एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन ने प्रवेश किया। परिणामतः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में नवजागरण की नई परम्परा का आर्विभाव हुआ। समाजसुधार, रूढ़ियो से मुक्ति, कुरीतियों का विरोध तथा साहित्य की नई दिशा जैसे कार्यभार का दायित्व संभालते हुए भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, देश प्रेम समाजसुधार प्राचीन नवीन का मिश्रण जैसे कई चित्र उभरकर सामने आए। काव्य में भाव भाषाशैली विचार सभी में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन, जगमोहन आदि कई लेखक शैली दिशा में भारतेन्दु को सक्रिय योगदान देते रहे। परिणामतः काव्य रीतिकालीन घोर श्रृंगारिकता के चंगुल से निकलकर जनजन के जीवन से जुड़ता चला गया। इस युग के साहित्य व साहित्यकारों ने प्रसाद को भी एक पृष्ठभूमि प्रदान की। भारतेन्दु क बहुमुखी व्यक्तित्व से तो प्रसाद जी अत्यंत प्रभावित हुए लगभग उसी युग में प्रसाद जी आगे की बागडोर संभालने के लिए अवतरित हो रहे थे। स्वच्छन्दवादी कवियों की वाणी में यौवन आवेग के साथ विद्रोह भाव की भी अभिव्यक्ति हुई है प्राचीन और नवीन का मिलन, रूढ़िया के प्रति विद्रोह, रहस्य भावना की प्रधानता आदि कई दृष्टियाँ सहित्य में समन्वित हुई थी। शान्ति व आनंद जैसे उदात्त तत्व काव्य व सहित्य का लक्ष्य तथा आदर्श बने। मार्क्स की समाजवादी प्रवृत्तियां भी सक्रिय हो रही थी। रवीन्द्र की गीतांजलि एकजुट होने के मूलमंत्र दे रही थी। ऐसे चुनौती भरे समाज व परिस्थितियों में प्रसाद जैसे महाशक्ति प्रवेश पा रही थी। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास निबन्ध

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आदि क्षेत्रों में अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा एवं सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतनापरक दृष्टि लेकर नेतृत्व प्रदान करने का दायित्व संभाला जयशंकर पसाद ने राष्ट्रप्रेम, अतीत के प्रति अनुराग एवं श्रद्धा, सांस्कृतिक मोह तथा मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना ही प्रसाद ही पहचान बनते है। कामायनी जैसे–महाकाव्यात्मक – महाग्रन्थ के इस प्रेणता ने समग्र भारतीय दर्शन का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत कर इच्छा, ज्ञान, कर्म की जो आनंदप्रद राह दिखाई है, वह अनन्य है, अन्यतम है, श्रद्धेय है।

प्रसाद का आर्विभाव हिन्दी साहित्य के ऐसे युग में हुआ जब स्वतंत्रता संग्राम का जोश और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक गरिमा को सुरक्षित रखने की छटपटाहट विदेशी सत्ता के उन्मूलन की राह खोजने को बाधित कर रहे थे। वैमनस्व तथा भेदभाव इस सम्मिलित क्रान्ति यज्ञ की आहुति बन चुके थें प्रसाद जी ने राजनीति, सांस्कृतिक, धर्म व्यापार मूल्य तथा विचारों भावों के ऐसे उथल पुथल मचा देने वाले युग में इतिहास संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा भाव पैदा किया। काव्य नाटक, निबंध आदि के माध्यम स कवि गरिमा मण्डित भारतीय इतिहास तथा भारतीय संस्कृति की झांकी बार–बार प्रस्तुत करता है। प्राचीन और ऐतिहासिक घटनाओं का सहारा लेकर अन्वेषी कवि ने भारतीय संस्कृति के बिखरे अवयवों को एकत्रितकर जन–जन में इसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न की तथा भारतीय एवं विदेशी संस्कृति के संगम में आधुनिक मानवता को विकास देने वाली संस्कृति को भी तैयार किया। प्रसाद ने महाभारत पुराण, रामायण उपनिषद् तथा अन्य ऐतिहासिक व संस्कृत ग्रन्थों का अनुशीलन करते हुए अपने समग्र साहित्य कोशक्ति प्रदान कीं चित्रकूट, अयोध्या का उद्धार, महाराजा का महत्व, शेरसिंह का शस्त्र समर्पण, पेशोला की प्रतिध्वनि, तथा कामायनी जैसे काव्यकृतियां इसके प्रमाण हैं तो स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नागयज्ञ, जैसे नाटक भी इसी के उदाहरण है। इसी प्रकार कई कहानियों में भी प्रसाद के इसी दिव्यदृष्टि को देखा जा सकता है। प्रसाद के पात्र भी इतिहास एवं संस्कृति के विशिष्ट पात्र हैं। 'अजातशत्रु' नाटक में बौद्धकालीन आधार को अपनाते हैं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तो चन्द्रगुप्त में मौर्यकालीन आधार को। इरावती उपन्यास में मौर्यकालीन पतन कोशुंगवंश प्रादर्भाव को आधार बनाया है। स्कन्दगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी में गुप्त कालीन इतिहास को उजागर करने का सफलतम प्रयास है तो राजश्री और प्रायश्चित्त में मध्यकालीन इतिहास आधार बना है। इसी प्रकार नूरी, चित्तौड, गुलाम, ममता, जहाआरा, तानसेन उद्धार तथा स्वर्ग के खण्डहर जैसी कई कहानियां भी ऐतिहासिक आधार रखती है। अतः यह तो स्पष्ट ही है कि प्रसाद ने भारतीय संस्कृति के उज्जवलतम रूप को प्रस्तुत करने के लिए ही इतिहास का सहारा लिया और उसे साहित्यिक स्पर्श देने के लिस कहीं–कहीं मर्मस्पर्शी कल्पना का अद्भुत मिश्रण भी कर दिया है। कवि इतिहास एवं कल्पना के बहुरंगी चित्रों से अपने साहित्य का सुसज्जित ही नहीं करता, प्राचीन भारत की स्वर्णिम झांकी प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति के निखरे हुए स्वरूप को भी दर्शाता है। अतः इतिहास के अंधकार युग से लेकर अंग्रेजी युग तक की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाआ की आधार भित्ति पर कवि अपना साहित्य प्रासाद निर्मित करता है। यही कारण है कि उनके काव्य नाटक एवं कहानियों आदि में इतिहास के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं की आत्मा झलकती जान पड़ती है। ''प्रलय की छाया'' जैसी ऐतिहासिकगीति रचना में गुर्जर प्रदेश की अनिंद्य सुन्दरी कमला का अलाउद्दीन द्वारा बन्दी बनाया जाना सांस्कृतिक इतिहास पर कलंक माना जाता रहा किन्तु महाकवि प्रसाद में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी से रूप स्पर्धा करती कमला ही विवशता पर नया प्रकाश डाला है –

मैं भी थी कमला

रूप रानी गुजरात की।

सोचती थी

पद्मिनी जली थी स्वयं किन्तु मैं जलाउंगी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दावानल ज्वाला

ज्वाला सुलतान जले।

देखें तो प्रचण्ड रूप ज्वाला सी धधकती

मुझको सजीव वह अपने विरूद्ध।

इसी तरह ''शेरसिंह'' काशस्त्र समर्पण में सिख इतिहास ही एक महत्वपूर्ण घटना को उजागर किया गया है। प्रसाद ने महाराज रणजीत सिंह के बाद के पंजाब और रानी जिन्दन की विवशता का अत्यंत सजीव वर्णन किया हैं। अंग्रेजों एवं सिक्खों के मध्य पहला बड़ा युद्ध चिलयानवाला में हुआ और अन्तिम गुजरात में। प्रसाद में गुजरात के इस युद्ध में सिक्खों की वीरता का बखान किया है ––

कहेगीशतद्धशत संगारों की साक्षिणी

सिक्ख थे सजीव

स्वतत्व रक्षा में प्रबुद्ध थे।

जीना जानते थे।

मरने की जानते थे सिक्ख।

स्पष्ट है प्रसाद इतिहास की आश्रय संस्कृति के उज्ज़वल पक्ष एवं स्वरूप को हमारे सम्मुख बार–बार उजागर करने के लिए ही लेते हैं। दर्शन और आध्यात्म कभी उन्हें हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर जाने की प्रेरणा देते हैं तो कर्तव्य और धम्र उन्हें इतिहास के गलियारे में उतरने की शक्ति देते हैं। प्रसाद साहित्य की मूल चेतना को स्पष्ट करती ये पंक्तियां ––

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय के आंगन में उसे, प्रथम किरणें का दे उपहार।

उषा ने हंश अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक द्वार।।

—— स्कन्दगुप्त

औरों को हंसते देखे मनु, हंसो और सुख पाओ।

अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।।———(कामायनी)

जननी जिसकी जन्म भूमि हो, वसुन्धरा ही कश्ती हो।

विश्व स्वदेश, भ्रात मानव हो, पिता परम अविनाश हो।— (कानन कुसुम)

इस प्रकार के गौरवगान तथा सांस्कृतितक श्रद्धा से युक्त गीत गाने वाला यह महाकवि 'मनु' जैसे आदिपुरूष का निरूपण करके भी जीवन संघर्ष की राह दिखाता है। चन्द्रगुप्त नाछक में कार्नेलिया विदेशी बालिका होकर भी ''अरूण यह मधुमय देश हमारा'' गीत गाकर भारत भूमि के प्रति अपने प्यार को दर्शाती है। आदि पुरूष मानव मनु हिमालय के उत्त्ंग शिखर पर विराजते हैं। निश्चित ही प्रसाद भारतीय इतिहास, सभ्यता और संस्कृति के पोषक प्रहरी थे। सांस्कृतिक पुनरूत्थान की ये रेखाएं उनके इसी अनुराग की परिचायक है। बाबा रामनाथ, चाणक्य तथा दाण्डायायन जैसे सांस्कृतिक प्रतीक–पात्र, धर्म और दर्शन का अद्भुत समन्वय, भारतीय आत्मवाद और सार्वभौमिकता की स्थापना और मानव संस्कृति की विजय का उद्घोष —— सबके सब प्रसाद जी की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक श्रद्धा के गवाह है।

हिन्दी साहित्य के छायावादी युग में स्वातन्त्रय का मूल मंत्र पूरे देश में स्फूर्ति संचरित कर रहा था मानवीय गुणों की स्थापना और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठाप्रत्येक छायावादी कवि का लक्ष्य बन गया था। प्राचीन भारतीय गौरव और सांस्कृतिक दार्शनिक मूल्यों की स्थापना व अभिव्यक्ति के प्रति प्रसाद का अनुराग भी राष्ट्रीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भावना की प्रेरणा बन रहा था। अतीत की चेतना भावुक कवि को जागृति के गीत प्रदान करती रही और युगीन परिवेश उसके इन गीतों के मूल्यों की शक्ति जुटाता रहा। त्याग, एकता, और आत्म बलिदान की भावनाएं ही नहीं शक्ति, संगठन, और शौर्य का आह्वाहन देने लगा। चन्द्रगुप्त नाटक में 'अलका' नागरिकों को प्रोत्साहित करती है –– हिमाद्रि तुंग श्रृंग से/प्रबुद्धशुद्ध भारती/स्वयं प्रभा समुज्जवला/स्वतंत्रता पुकारती/अमर वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो/प्रशस्त पुण्य पंथ है– बढ़े चलो, बढ़े चलो।''

प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना कूट–कूट कर भरी है, काव्य भी इसी चेतना की जीवन्त मिशाल है। कवि की राष्ट्रीयता देशभक्ति एवं देशप्रेम के प्रति यह दृढ़भावना पौराणिक एवं ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। विदेशियों की पराजय, देश के प्रति उल्लास, श्रद्धा समर्पण एवं बलिदान की भावना आदि कई काव्य प्रसंग इसी आस्था के प्रमाण है। निराशा में आशा और विजय का मार्ग प्रशस्त करते कवि के ये भाव द्रष्टव्य है जिसमे सभी संगिनी और रस रागिनी जलवार को जीवन साथी बताया गया है ––

अरी रंग – रंगिनी

सिक्खें के शौर्य भरे जीवन की संगिनी।

कपिशा हुई भी लाल तेरा पानी पार कर।

दुर्भद दुरन्त धमद स्युओं की त्रासनी ––

निकल, चली जा तू प्रतारणा के कर से ।

–– (शेरसिंह काशस्त्र समर्पण)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यह वह भारत है जहां के योद्धा–वीर लड़ना और मिटना जानते हैं। शस्त्र हो तो कोई बात भी नहीं और न हो तो भी निश्चित हथेली पर प्राण लिए घूमने वाले थे राष्ट्र भक्त सदैव जय के उपासक रहे हैं –

टहा खेलता कौन यहां शिशु सिंह से

आर्यवृन्द के सुन्दर सुखमय भाग्य सा

कहता है उसको लेकर निज गोद में–

खोल, खोल मुंह सिंह–बाल, में देखकर

ध्यान लूंगा मैं तेरे दांतों को है भले

देखूंतो यह कैसे कुटिल कठोर है। –– (कानन कसुम)

प्रसाद ने भारतीय जनता के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत कर अत्याचारी अंग्रेजशासकों और देशद्रोहियों के प्रति खुलकर विद्रोह करने की सीख ही नहीं दी, मनुष्यता और मानवता का पाठ पढ़ाकर नैतिक और आदर्श मूल्यों की प्रतिष्ठा का मंत्र भी दिया। कवि की निजी दृष्टि का मानवीय बोध और इस बोध का आर्त स्वर जीवन के शाश्वत उपादानों के प्रति सजग करता है। मानव को सर्वोपरि मानने वाले इस महाकवि ने 'मनु' को अपने इसी आदर्श मानस का प्रतीक बनाकर उसकी आन्तरिक भावनाओं में संगम की सीमाओं को रूपायित किया है। श्रद्धा मनु को ही जागृति का सन्देश ही नहीं सुनाती, समसत मानव जाति को अपन मंत्र प्रदान करती है–

यह नीड़ मनोहर कृतियों का,

यह विश्व कर्म रंग स्थल है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है परम्परा लग रही यहां

ठहरा जिसमें जितना बल है।

मानवीय मूल्यों की दृढस्थापना का यह सन्देश सम्पूर्ण मानवता के लिए है। आधुनिक वैज्ञानिकता, भौतिका और विषमताओं के विधिचित्रण प्रस्तुत करके भी प्रसाद स्वाभाविकता और प्रकृति के मर्म से कटने का दर्द ही व्यक्त करते हैं। दूसरों को हंसते देख सदैव प्रसन्न रहने की सीख देने वाली श्रद्धा समरस्ता का मार्ग प्रशस्त करती हुई मानव जाति की चतुर्दिक उन्नति की कामना करती है। हृदय की वृत्तियों का विस्तार कर जीवनशक्ति का विकास करने की प्रेरणा देने वाला यह आशावादी आनंद के चरम शिखर पर पहुंचना और पहुंचाना चाहता है ––

विधाता की कल्धाणी सृष्टि

सफल हो इस भूतल पर पूर्ण।

पटे सागर, बिखरे ग्रह पुंज

और ज्वालामुखियां हो चूर्ण।।

शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त

विकल बिखरे हैं, हों निरूपाय।

समन्वय उनका करे समस्त

विजयिनी मानवता हो जाय।।

अंत में प्रसाद ने अपने जीवन अनुभव तथा अध्ययन को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। कल्पना एवं अनंभूति, इतिहास एवं संस्कृति तथा प्रेम एवं सौन्दर्य के योग से उन्होंने जिन आदर्शो का निर्माण किया उनमें जीवन दर्शन को सन्निहित करने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 11, November 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का सफल प्रयत्न किया है। कामायनी में वे मानव जाति के उत्थान और मानव जाति के उत्थान और आनंदशिखर की यात्रा का महा वर्णन करते हैं। आंसू में प्रसाद व्यक्तिगत प्रेम भावना को एक व्यापक धरातल प्रदान कर विश्व की करूणा को अपनी वेदना में समाहित करते हैं तो लहर में बौद्धदर्शन से प्रभावित युगचेतना को सफलतम अभिव्यक्ति देने वाले गीतों का सृजन करते है। जीवन को दृढ़ता से अपनी भावना में समन्वित कर अनेकों समस्याओं का समाधान खोजने वाले इस महाकवि ने मानवता के कल्याण का पथप्रशस्त किया है। बौद्धिकता, विज्ञानवाद तथा भौतिकतावाद की अति से त्रस्त मानवता में श्रद्धा आस्था, विश्वास एवं सहदृयता का पावन भाव जागृत करने वाले इस सर्जक ने भाव व कला दोनों दिशाओं में अपनी बहुमुखी प्रतिभा से उपकृत किया है। इस कालजयी महाकाव्य की देन भारतीय साहित्य के लिए ही नहीं, समग्र विश्व के लिए एक प्रेरणा बनती है। महाकवि प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक ही नहीं, विश्व साहित्य सृजन के पुण्य पथ को प्रशस्त करने वाले अप्रतिम, अद्धितीय तथा अलौकिक प्रतिभा के विश्व कवि बन जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

1— प्रसाद का काव्य, डा0 प्रेमशंकर भारती भंडार सन् 1986

2— छायावाद के आधार स्तम्भ, सं0 राम जी पाण्डेय, लिपि प्रकाश 1971

3— प्रसाद साहितय की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डा0 प्रेमदत्तशर्मा, जयपुर पुस्तक सदन सन् 1968

4— जयशंकर, नंद दुलारे बाजपेयी भारतीभंडार, इलाहाबाद

5— छायावाद की परिक्रमा, 'श्याम किशोर मिश्र लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद सन् 1985'